(v) कार्यालय / जिला स्तर – कार्यालय स्तर के कार्यकर्ताओं की क्षमता विकास हेतु इन्टरनल रिसोर्स पूल एवं Pedagogy Expert के माध्यम से समय–समय पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित कर कार्यकर्ताओं की क्षमता में विकास का प्रयास किया जाता है।

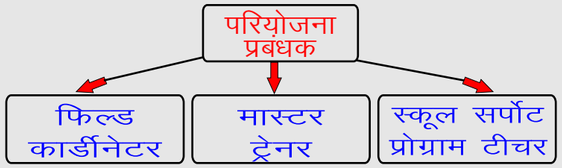

परियोजना प्रबंधक
- फिल्ड कार्डीनेटर
- मास्टर ट्रेनर
- स्कूल सपोर्ट प्रोग्राम टीचर

(vi) आँगनबाड़ी केन्द्र – आँगनबाड़ी केन्द्र के कार्यकर्ताओं की क्षमता हेतु उन्हें नियमित प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि स्कूल पूर्व बच्चों को थीम आधारित एवं गुणात्मक शिक्षा दी जा सके।

बाल मेला सह स्थापना दिवस

2 फरवरी 2015 को रविन्द्र भवन, पाकुड़ में बाल मेला सह फेस की स्थापना दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में फेस द्वारा संचालित विभिन्न परियोजनाओं के बच्चों एवं कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया जैसे – CEEE, IIMPACT आदि। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था कि पाकुड़ जिले के ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावक एवं बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक बनाया जाये एवं बेहतर शिक्षा प्रदान करने की दिशा सुनिश्चित की जाये। इस कार्यक्रम के सफल संचालन में जिला एवं प्रखंड स्तरीय विभिन्न पदाधिकारियों ने अहम् भूमिका निभाई। जैसे–उपायुक्त, अनुमण्डल पदाधिकारी, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी इत्यादि। कार्यक्रम में 'फेस' की सफलता कहानी एवं मिशन को उपस्थित लोगों के साथ साझा किया गया। कार्यक्रम में गाँव के गणमान्य लोगों ने भी 'फेस' के गतिविधियों के बारे में अपना अनुभव साझा किया। इस कार्यक्रम के उपलक्ष्य में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कार्यकर्ता एवं बच्चों को भी सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम को मीडिया के द्वारा पाकुड़ जिला के लोगों तक पहुँचाने की कोशिश की गई और यह संवाद देने का प्रयास किया गया कि गाँव के बच्चे भी शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं सिर्फ उन्हें स्कूल भेजने की जरूरत है।

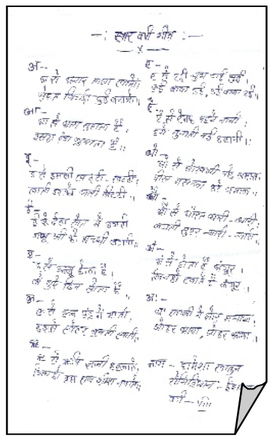

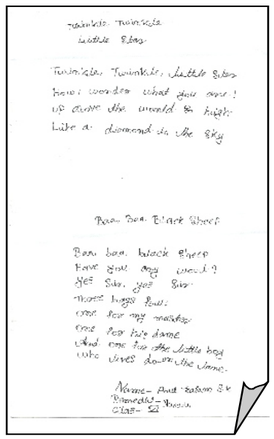

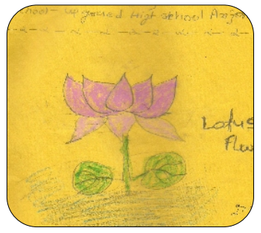

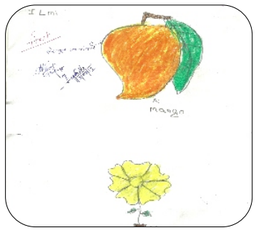

Supported by : Tata Education Trust (TET), Mumbai   Facilitated by : FACE, Pakur

Reg No. 192, Established- 2002   सी० इ० इ० इ० परियोजना आधारित

प्रारंभिक शिक्षा पर समाचार पत्रिका 2014-15

हमारा लक्ष्यः शिक्षा और समग्र विकास के माध्यम से एक सशक्त और सुन्दर समाज का निर्माण करना

पाठक रूप रेखा एवं प्रसारः
7 से 16 वर्ष के बच्चे, प्राथमिक शिक्षक, स्टेक होल्डर्स, आँगनबाड़ी सेविका, मकतब के शिक्षक वोलेनटियर एवं गैर सरकारी संस्था इत्यादि।

संपादकः श्री शारीक हयात खान
सह–संपादिकाः श्रीमति रीतु पाण्डेय

रूपांककार : मृणाल प्रमाणिक

बांगला अनुवादकः डॉ शुभेन्दु विकास मंडल

समाचार पत्र के लेखन में सहयोगी कार्यकर्ताः
:मेहेबुब आलम, मो० शहादत हुसैन, मो० फेकारूल शेख, जुलियस सोरेन, असगर अली, राशेद शेख, प्रेमलाल मराण्डी एवं दिलवर हुसैन

फेस, राजापाड़ा, पाकुड़, झारखण्ड
दुरभाष : 09431165148
Website : www.faceindia.net

स्वयं सेवी संस्था 'फेस' जमीनी स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्था है जो पाकुड़ जिले के सदर प्रखंड के लक्षित 12 पंचायतों (i. पृथ्वीनगर ii. झिकरहाटी iii. नवादा iv. ईशाकपुर v. फारसा vi. चाँचकी vii. किस्मत कदमसार viii. गंधाईपुर ix. मनिरामपुर x. ईलामी xi. तारानगर xii. जयकिष्टोपुर) में ग्रामीण शैक्षणिक परिवेश में प्रारंम्भिक शिक्षा की स्थिति को बेहतर एवं गुणात्मक बनाने के उद्देश्य से 12 क्लस्टर लर्निंग सेन्टर के माध्यम से काम कर रही है।

उपरोक्त सभी Cluster Learning Centers (C.L.C) को एक शैक्षणिक हब के रूप में विकसित किया गया है जहाँ से सरकारी विद्यालयों, आँगनबाड़ी केन्द्रों, मकतब / मदरसों, विशेष प्रशिक्षण एवं रिमिडियल केन्द्रों के साथ शैक्षणिक अंतःक्रिया की जाती है और साथ ही शैक्षणिक परियोजनाओं की गतिविधियों का क्रियान्वयन तथा सबंधित रणनीति निर्माण हेतु कार्यकर्ताओं के साथ कार्यशालाएँ भी की जाती हैं। इस प्रकार प्रत्येक गतिविधि के आधार पर समुदाय, सरकारी विद्यालय के शिक्षक, मदरसा के कार्यकर्ता आदि के साथ कार्यकलाप किया जाता है जिसमें – शैक्षणिक वातावरण के निर्माण के लिए ग्रामीण स्तर पर शैक्षणिक कार्यक्रम जैसे– वाद – विवाद, चित्रांकन शब्दकोष प्रतियोगिता, कविता, स्टोरी टेलींग सत्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस गतिविधि में औपचारिक विद्यालय, मकतब / मदरसा, रिमिडीयल, विशेष प्रशिक्षण केन्द्र एवं समुदाय के बच्चे भाग लेते हैं।

समुदाय के शैक्षणिक वातावरण निर्माण हेतु Cluster Learning Center (C.L.C) में पुस्तकालय गतिविधि संचालित की जाती है जिसमें बच्चे एवं समुदाय के लोग दैनिक अखबार, पत्रिका, कहानी की किताबें इत्यादि पढ़ते हैं और साथ ही यहाँ बच्चों की विषय आधारित समस्याओं का शिक्षकों के द्वारा निदान भी किया जाता है। केन्द्रों से संचालित पुस्तकालयों में ऐसी व्यवस्था की गई है ताकि ग्रामीण एवं बच्चे किताबों को लेकर घर जा सकें एवं पढ़ने के बाद वापस जमा कर सकें। सरकारी विद्यालय, मकतब / मदरसा के शिक्षक एवं फेस के कार्यकर्ताओं के बीच शिक्षा की बदहाल स्थिति को सुधारने के लिए आपस में विचार – विमर्श कर एक विकल्प या ठोस कदम की ओर बढ़ने का प्रयास किया जाता है। साथ–साथ विषय आधारित पठन–पाठन की समस्याओं का समाधान भी ढूँढा जाता है।

CLC में औपचारिक विद्यालय, मकतब / मदरसा रिमिडीयल, विशेष प्रशिक्षण केन्द्र एवं आँगनबाड़ी केन्द्र से संबंधित सभी दस्तावेज एवं रिकार्ड (चाईल्ड प्रोफाईल, बैठक पंजी, उपस्थिति पंजी, गतिविधि पंजी इत्यादि) रखा जाता है।

Supported by : Tata Education Trust (TET), Mumbai   Facilitated by : FACE, Pakur

शैक्षणिक गतिविधियाँ

बारह पंचायतों में चल रहे सहयोगी शिक्षण केन्द्रों के बच्चे, विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों के बच्चे, बालिका शिक्षण केन्द्र की बच्चियाँ एवं औपचारिक विद्यालय एवं मकतब/मदरसा के बच्चों के साथ शैक्षणिक क्रियाकलाप किया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य बच्चों को शिक्षा के प्रति रूचि, नियमित केन्द्र संचालन, गाँव के लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक करना एवं गुणात्मक शिक्षा का माहौल तैयार करना है। इस कार्य को सफल बनाने के लिए सरकारी विद्यालय के शिक्षक, गाँव के गण–मान्य व्यक्ति एवं फेस के कार्यकर्ताओं के द्वारा अहम् भूमिका निभाई जा रही है।

(क) विशेश प्रशिक्षण (ब्रीज एजुकेशन) – चलाए जा रहे केन्द्रों में 8–13 साल की उम्र के अनामांकित एवं छीजित कुल 240 बच्चों को ब्रीज एजुकेशन के माध्यम से तैयार किया जाता है। बच्चों को उनकी उम्र एवं वर्ग के आधार पर तैयार कर एक साल के बाद औपचारिक विद्यालय में नामांकन कराया जाता है ताकि ये बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ कर अपनी पढ़ाई को जारी रख सकें।

(ख) सहयोगी शिक्षा (रिमिडियल एजुकेशन) – हमारी संस्था के द्वारा कुल 12 केन्द्रों में औपचारिक विद्यालय द्वारा चिह्नित वर्ग I – VIII के कुल 360 कमजोर बच्चों को शैक्षणिक सहयोग दिया जाता है जिसमें यह प्रयास रहता है कि एक साल के अन्दर कमजोर बच्चे अपने–अपने वर्ग के शैक्षणिक स्तर प्राप्त कर सकें।

ग) स्कूल पूर्व शिक्षा (आँगनबाड़ी) –लक्षित 12 पंचायतों के कुल 30 आँगनबाड़ी केन्द्रों में प्रति वर्ष कुल 1200 बच्चों को आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के सहयोग से पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाती है जिसमें 3–4 आयु वर्ग के बच्चों को मोटर विकास, ज्ञानात्मक विकास के साथ–साथ उठना–बैठना, बोलना, साफ–सफाई आदि सिखाया जाता है। 4–5 आयु वर्ग के बच्चों को मोटर विकास एवं ज्ञानात्मक विकास के साथ–साथ हिन्दी, अंग्रेजी की वर्णमाला एवं गणित में संख्याओं का मौखिक उच्चारण एवं पहचान कराना सिखाया जाता है तथा 5– 6 आयु वर्ग के बच्चों को हिन्दी एवं अंग्रेजी वर्णों का मौखिक एवं लिखित ज्ञान के साथ–साथ छोटे–छोटे शब्द निर्माण भी सिखाया जाता है। इसी भाँति गणित में संख्याओं के मौखिक एवं लिखित ज्ञान के साथ–साथ साधारण जोड़ घटाव सिखाने के बाद एक साल के अंदर वर्ग I में मुख्यधारा से जोड़ दिया जाता है।

(घ) मकतब/मदरसा – मकतब/मदरसा के शिक्षकों का औपचारिक शिक्षण में विशेष प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है ताकि शिक्षक विभिन्न गतिविधियों के द्वारा सरल तरीके से हिन्दी, गणित एवं अंग्रेजी की शिक्षा दे सकें। मकतब/मदरसा केन्द्रों में प्रत्येक माह विभिन्न तरह की गतिविधियाँ कराकर बच्चों को शैक्षणिक गतिविधियों के लिए प्रेरित किया जाता है। द्विमासिक प्रतिस्पर्धाएँ भी कराई जाती हैं एवं बच्चों के मनोबल को बढ़ाने के लिए उन्हें पुरस्कृत भी किया जाता है।

(ङ०) आवासीय कैम्प – रिमिडियल, विशेष प्रशिक्षण एवं औपचारिक विद्यालय के 300 बच्चों के लिए आवासीय विद्यालयों में विशेष शैक्षणिक क्रियाकलाप कराया गया है जहाँ बच्चों की मुख्य शैक्षणिक कमजोरियों को चिह्नित कर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से उनकी कमजोरियों को दूर कर उन्हें दक्ष बनाया गया है एवं आवासीय विद्यालय के शिक्षकों के द्वारा लगातार अनुश्रवण/ट्रेकिंग किया जाता है।

प्रारंम्भिक शिक्षा में क्षमता बर्द्धन

किसी भी परियोजना को सफल बनाने हेतु क्षमता बर्द्धन एक महत्वपूर्ण गतिविधि है जिससे कार्यकर्ताओं की क्षमता में निरंतर वृद्धि होती है। क्षमता विकास की गतिविधियाँ इस प्रकार कराई जाती हैं –

(i) विद्यालय प्रबंधन समिति – विद्यालय प्रबंधन समिति के दायरे में आने वाले सभी गतिविधि एवं सदस्यों के कर्तव्य एवं भूमिका तथा बच्चों की शत–प्रतिशत उपस्थिति के प्रयास, समुदाय के बच्चों को अधिक से अधिक संख्या में विद्यालय से जोड़ना आदि बिन्दुओं पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है।

(ii) औपचारिक विद्यालय – सरकारी विद्यालय के शिक्षक/शिक्षिकाओं के साथ उन्मूखीकरण कार्यशालाएँ की जाती हैं जिसमें बच्चों को आधुनिक करिकुलम आधारित गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के संबंध में प्रशिक्षण दिया जाता है।

(iii) मकतब/मदरसा – दीनी शिक्षा के साथ – साथ बच्चों को दुनियावी शिक्षा से अवगत कराने के उद्देश्य से शिक्षकों को त्रैमासिक प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें उन्हें पढ़ाने की पद्धति एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया बतायी जाती है।

(iv) फिल्ड लेवेल कार्यकर्त्ता – फिल्ड स्तर में जुड़े सभी कार्यकर्ताओं के शैक्षणिक स्तर में क्षमता विकास हेतु प्रत्येक माह प्रशिक्षण दिया जाता है।

(v) TLM निर्माण – रिमिडियल, विशेष प्रशिक्षण, स्कूल पूर्व शिक्षा केन्द्र की मासिक कार्ययोजना के आधार पर शिक्षण सामग्री (TLM) निर्माण कर केन्द्र में प्रयोग किया जाता हैं। जैसे– अक्षर, शब्द, मात्रा, साधारण वाक्य निर्माण कहानी, अनुच्छेद कट आउट तथा गणित में संख्या कार्ड मोती माला, पहाड़ा चक्र, एबेकस आदि। TLM के माध्यम से बच्चों को सिखाने की पूरी पद्धति बताई जाती है।

(vi) भाषा–पुस्तिका – सीखना–सिखाना –

भाषा ज्ञान प्राप्ति का आधार है। संवाद का आधार है। भाषा पर हमारा जितना नियंत्रण होगा हम उतना ही प्रभावशाली ढंग से संवाद कर पाएंगे एवं ज्ञान प्राप्ति की दिशा प्रशस्त कर पाएंगे। अतः प्राथमिक शिक्षा का मौलिक उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि बच्चों में प्रथम पाँच वर्षों में सिलसिलेवार ढंग से भाषा का ऐसा आधार तैयार कर दिया जाये जिस पर बच्चे आगे जाकर भाषा की एक प्रभावशाली संरचना का निर्माण कर पाएं।

परन्तु विशेष कर ग्रामीण परिवेश में विद्यालयों में भाषा सीखने – सिखाने की परिस्थितियाँ ऐसी विकट हैं कि न तो सही ढंग से भाषा की शिक्षा दी जाती है और न ही सही परिवेश में बच्चे भाषा सीख पाते हैं। शिक्षक एवं छात्र दोनों में ही भाषा की त्रुटियाँ एवं अधूरा ज्ञान दिखाई पड़ता है जो चिन्ताजनक है। प्राथमिक कक्षाओं में चलने वाली हिन्दी भाषा की पुस्तकें भाषा ज्ञान को क्रम वार ढंग से आगे बढ़ाने में अधूरी दिखती है और साथ ही पुस्तकों में शिक्षकों के लिए किसी विषय की शिक्षण प्रणाली, उसके उद्देश्य एवं उसके तरीके से संबंधित आवश्यक टिप्पणियों का भी अभाव दिखता है जिस कारण प्रशिक्षण एवं शिक्षण में ताल–मेल या सामंजस्य नहीं बन पाता है और बच्चों में भाषा की सही समझ नहीं बन पाती है।

यह भाषा–पुस्तिका हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने की दिशा में, प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में संस्था द्वारा ग्रामीण क्षेत्रो में किए गए कार्यों के अनुभव के आधार पर एक ऐसा प्रयास है जिससे बच्चे एवं शिक्षक दोनों ही भाषा सीखने–सिखाने की दिशा में लाभान्वित हो पाएं और भाषा सीखने–सिखाने का सही उद्देश्य प्राप्त किया जा सके।